: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चमड़े का उपयोग छोड़िए

श्रीराम शर्मा आचार्य; गायत्री तपोभूमि मथुरा

भगवान् ने मनुष्य को अन्य प्राणियों के अपेक्षा अधिक बुद्धि देकर सृष्टि का मुकट मणि बनाया है। साथ ही यह जिम्मेदारी भी सौंपी है कि उस बुद्धि का उपयोग सृष्टि के अन्य प्राणियों की सुख सुविधा के लिए करे। केवल अपने शरीर, कुटुम्ब, देश या मानव प्राणी तक ही उसके कर्तव्य सीमित नहीं हैं वरन् सारी वसुधा ही इसका कुटुम्ब है। जैसा कुटुम्ब का गृह संचालक अपने परिवार के छोटे से छोटे बालकों की सुख सुविधा का ध्यान रखता है उसी प्रकार मनुष्य का भी यह नियत कर्तव्य है कि वह अन्य प्राणियों को भी अपना छोटा भाई और पुत्र तुल्य मानकर उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखे। सभी धर्म ग्रन्थों में इस 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धान्त का प्रति पादन किया गया है। सभी सन्तों और सत्पुरुषों ने इस आदर्श का प्रतिपादन किया है कि सृष्टि के अन्य प्राणियों को सताया न जाय वरन् उनके साथ सहानुभूति पूर्ण सद्व्यवहार किया जाय। भगवान महावीर का अवतार ही इस मानवता के प्रधान आदर्श का प्रतिपादन करने के लिए ही हुआ था। उन्होंने पानी और वायु में रहने वाले सूक्ष्म जन्तुओं तक पर दया करने और उन्हें कष्ट न पहुँचाने का—चींटी तक को न सताने का व्रत लेने को जन समाज प्रशिक्षित किया था। सभी सच्चे सत्पुरुषों की यही मान्यता और शिक्षा रही है।

आज मनुष्य अपने उचित धर्म और कर्तव्य से बुरी तरह नीचे गिरता जा रहा है मांसाहार मनुष्यता के ऊपर भारी कलंक है। बेचारे भोले भाले निर्दोष पशु पक्षियों को चीत्कार करते हुए बिल-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिलाते हुए मर्मान्तक कष्ट देकर उनकी हत्या इसलिए की जाय उनके मांस का स्वाद चखने का मजा हमें मिले—निस्सन्देह मानव के आदर्शों का स्पष्ट उल्लंघन है। खूनी हिंसक सिंह, व्याघ्र, भेड़ि सर्प, बिच्छू आदि जानवरों को मार कर उनके त्रास में दूसरों को बच की बात समझ में आ सकती है पर जीभ के चटोरेपन की लिए बुझाने के लिए पेट को कब्रिस्तान बनाना किसी भी नैतिक आदर्श ताल मेल नहीं रखता।

मांसाहार के लिए भारी मात्रा में जो जीव हत्या होती है, ह हम जानते हैं और उससे घृणा भी करते हैं। मानवता के आदर्शों आस्था रखने वाले लोग पशुओं, पक्षियों और जलचरों का खून बहा जाना और उनकी लाश चबाया जाना एक गर्हित कर्म समझते हैं अ उससे बचते हैं। पर कुछ कार्य ऐसे हैं जो प्रकारान्तर से मांसाह जैसे ही दूषित हैं पर उनकी प्रक्रिया आँखों से ओझल रहने के कार वह बुराई दिखाई नहीं पड़ती। दयालु प्रकृति के धार्मिक प्रकृति के ल भी उस पाप में भागीदार बनते रहते हैं।

चमड़े के प्रयोग में एक ऐसी ही बुराई है जो लगभग मांसाह के ही समान है। कसाई के लिए किसी पशु को काटने में आर्थिक दृ से मांस की अपेक्षा भी अधिक २ लाभदायक उसका चमड़ा होता है जिस चीज की मांग अधिक होती है वह स्वभावतः महंगी हो जाती है चमड़े की मांग आज सर्वत्र बहुत अधिक है, इसलिए उसकी कीमतें काफी चढ़ी हुई हैं। कसाई जिस पशु को काटता है उसकी अधिक कीमत चमड़े से ही वसूल हो जाती है। मांस तो गौण चीज रह जा है। यदि चमड़े के दाम इतने मंहगे न हों तो कसाई के लिए बू खाना चलाना एक हानिकारक एवं व्यर्थ का झंझट बन जाय और अ जितने पशु कटते हैं उससे आधे भी न कटें। चमड़े के लाभ के लि इतने अधिक पशु काटे जाते हैं कि उनका मांस इस देश में नहीं ख सकता फलस्वरूप उसे जहाज भर कर विदेश को सस्ते दामों पर बेच के लिये भेजना पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब लोग फैशन परस्ती, ठाठबाठ और शानशौकत में अपना बड़प्पन समझने लगे हैं। चमड़ा, रंग, चमक मुलायमी और खूबसूरती की दृष्टि से बढ़िया एवं फैशन की चीज मान लिया गया है। फलस्वरूप उसकी बनी हुई चीजें उपयोग करने की होड़ चल पड़ी है। जो जितना ज्यादा चमड़ा उपयोग करे वह उतना ही अधिक धनी, सभ्य एवं बड़ा आदमी समझा जाता है। इसलिये लोग अधिक पैसा खर्च करके अनावश्यक रूप से चमड़े की बनी चीजों का उपयोग करते हैं। चमड़े के अटेची बुकस, हैण्डबेग, कमर की बैल्ट, घड़ी के पट्टे उपयोग करने में लोग बड़ी शान समझते हैं। हाथों के मोजे, और कोट तक चमड़े के बनते हैं। स्त्रियों के लिए तो हाथ में चमड़े का बटुआ लटकाये फिरना एक खास फैशन हो गया है जनाने कोटों के गले में लोमड़ी का मुलायम चमड़ा लेना किसी महिला के 'सभ्य लेडी' होने का चिन्ह माना जाता है। जूतों के लिए तो बढ़िया से बढ़िया चमड़े की भारी मात्रा में जरूरत होती है।

जो चमड़ा आजकल उपलब्ध होता है उसमें ६७ प्रतिशत काटे हुए पशुओं का होता है। पशु के बूढ़ा होने से पूर्व आमतौर से उसे कसाई खाने पहुँचा दिया जाता है। देहाती क्षेत्र में अपनी मौत मरने वाले जानवर केवल ३ प्रतिशत होते हैं और उनका चमड़ा भी देहाती चर्मकार द्वारा वहीं के छोटे-मोटे कार्यों में, मोटे भद्दे जूते चरस आदि बनाने में खप जाता है। अपनी मौत मरे हुए पशुओं का चमड़ा कमजोर और भद्दा होता है उससे बढ़िया चीजें नहीं बनती। इसलिए शहरी क्षेत्र में बनने वाली प्रत्येक खूबसूरत चीज आमतौर से काटे हुए पशु के चमड़े की होती है।

यह समझना भूल है कि काटने की हत्या केवल कसाई को लगती है। मनु भगवान ने इस भूल का भली प्रकार निराकरण कर दिया है। उनने आठ प्रकार के कसाई बताये हैं जिनमें मांस खाने वाला उसके चमड़े आदि का उपयोग करने वाला भी सम्मिलित है। क्योंकि कसाई को लाभ का लोभ देकर उससे हत्या कराने वाले तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यही लोग हैं । यदि ये खरीद न करे तो वह बिक्री के अभाव में किस प्रकार उस कार्य को कर सकेगा ? लोभ के लिए मनुष्य बुरे से बुरे कुकर्म करने को तैयार हो जाता है, इसलिए जहाँ पाप के लिए दंड की व्यवस्था रखी जाती है वहाँ वे उपाय भी करने पड़ते हैं जिनके कारण वह पाप कर्म अतिरिक्त लाभदायक सिद्ध होता है । पशु बध के विरुद्ध कानून का उल्लंघन करने वालों के लिए दंड व्यवस्था हो यह उचित है, पर साथ ही यह भी आवश्यक है कि उस व्यवसाय में जो भारी लाभ का आकर्षण है वह समाप्त किया जाय । यह कार्य चमड़े का त्याग कर हम बिना कानून बने भी कर सकते हैं । चर्म त्याग का महत्व यदि जनता समझ ले तो तीन चौथाई पशुबध अपने आप बन्द हो सकता है ।

जब तक चमड़े का उपयोग बन्द करने के लिये प्रबल जनमत जागृत न किया जायगा तब तक पशुओं के गले पर कटारी चलना बन्द न होगी । आज तो बढ़िया किस्म के चमड़े की माँग बढ़ती जा रही है फल स्वरूप उसे प्राप्त करने के लिए ऐसे २ पैशाचिक उपाय काम में लाये जाते हैं जिन्हें देखकर तो क्या सुनकर भी रोमाञ्च खड़े हो जाते हैं । बढ़िया मुलायम चमड़ा पशुओं के गर्भस्थ बच्चों का होता है, उसकी कीमत भी बहुत होती है । जिसे प्राप्त करने के लिए कसाई लोग कानून की परवा न करके गर्भिणी गायों का पेट चीर कर या उनके गुप्त अङ्गों में लोम हर्षक कष्ट पहुँचा कर गर्भपात कराते हैं और उस गर्भस्थ बच्चे की खाल उतार कर इतने दाम को बेचते हैं कि उससे गर्भिणी के बच्चे की कीमत आसानी से वसूल हो जाती है । बिना गर्दन काटे, जीते जानवर का मुँह बन्द कर उसके हाथ पैर बाँध कर जो चमड़ा उतारा जाता है वह 'जीवित चर्म' कहलाता है । चूँकि उसमें खून भरा रहता है उसलिए मजबूत और बढ़िया माना जाता है । कसाई को कब परवा है कि इस निर्दयता में जानवरों को कई घन्टों मर्मान्तक वेदना में तड़पना पड़ेगा । जब खरीदार लोगों की फैशन इसी तरह चमड़े की माँग करती है तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह अपना लाभ ही रखेगा। गर्दन काट कर जल्दी उसका त्रास दूर करने की उसे चिन्ता क्यों हो ? चमड़े को अधिक मोटा बनाने का एक तरीका यह है कि जिन्दा पशु के हाथ पाँव मुँह को कस कर बाँध देते हैं और उस पर खोलता हुआ पानी डाल डालकर बेंतों से रुई की तरह धुनाई करते हैं जिससे चमड़ा फूलकर मोटा हो जाता है यह भी बहुत दाम का बिकता है। घन्टों रुई की तरह धुनने से पशु को भारी वेदना होनी स्वाभाविक है पर वह बेचारा निरीह जीव हमारी फैशन परास्ती के लिए यह नृशंसता सहने को विवश है। इन्सान के चोले में शैतान की यह करतूत देख कर पैशाचिकता भी लज्जित हो जाती है और इसके लिए उन लोगों को जिम्मेदार ठहराती है जो अपनी फैशन परस्ती के लिए अपने छोटे भाइयों पर पशुओं पर इस प्रकार का कहर बरसाते हैं। इतिहास में एक दो ही ऐसे मुसलिम बादशाहों का जिक्र है जिनमें अपने लिए राज प्राप्त करने के लिए अपने भाइयों को कत्ल कराया था। बात को मुद्दतें बीत गईं पर मानव जाति का इतिहास अभी तक उससे कलङ्कित है। वह घटना जब स्मरण हो आती है तो प्रत्येक सहृदय व्यक्ति के मन में सिहरन होती है। पर इन निरन्तर होने वाले कुकर्म प्रवाह के लिए क्या कहा जाय जिसके अनुसार मनुष्य अपने छोटे भाइयों पशुओं को—इसलिए इतना भारी त्रास देता है कि वह अधिक सभ्य कहलाये, अधिक खूबसूरत लगे अधिक शान शौकत वाला दीखे। यह आत्मिक पतन के लिए मनुष्य को जितना धिक्कारा जाय उतना ही कम है।

चमड़े से बनने वाली चीजों में से एक भी ऐसी नहीं है जो अन्य चीजों की बनी हुई प्राप्त न होती हो। बक्स लोहे के बनते ही हैं छोटी अटैची गत्ते और कपड़े की मिलती हैं, जूते—रबड़ के कपड़े और टायर के बने हुए मिलते हैं। पेटी, घड़ियों के पट्टे आदि प्लास्टिक के मिलते हैं यह चीजें चमड़े की अपेक्षा सस्ती भी काफी होती हैं। अन्तर केवल फैशन और शान का है। यदि इसमें थोड़ी कमी की जा सके तो लाखों पशुओं की जान हर साल बच सकती है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाखों का प्राण संकट टल सकता है, संसार में से पैशाचिकता का एक नंगा नृत्य तो कम से कम बन्द हो ही सकता है।

मनुष्यता का प्रथम चिह्न है दया करना, दूसरों के दुख को अपने दुख के समान समझना। जब तक यह दया भाव पैदा नहीं होता तब तक संत भी कसाई गिना जाता है। कहा भी है—"दया बिन सन्त कसाई।" कोई कितना ही विद्वान ज्ञानी, मुनी, सत्ताधारी एवं प्रतिष्ठित क्यों न हो. यदि उसका अन्त.करण दूसरों की पीड़ा से पीड़ित नहीं होता तो यही कहना पड़ेगा कि इसकी मानवता विकसित नहीं हुई। चमड़े को त्याग करके हम अपनी मानवता के विकाश का परिचय दे सकते हैं।

पालतू पशु भी अब मानव परिवार के ही एक अङ्ग बन गये हैं। नैतिक दृष्टि से पिछड़े हुए होने और कठिन परिश्रम करके हमें हर प्रकार से लाभान्वित करने की विशेषताओं के कारण वे हमारे लिए अपने मानव परिवार की ही तरह दया क्षमा, उदारता, सहृदयता एवं आत्मीयता के व्यवहार के अधिकारी हैं। उनके साथ निर्दयता एवम् हृदयहीनता का व्यवहार किया जाना हमारे लिए सर्वथा अनुचित है।

शक्ति से अधिक काम लेना और बोझ लादना जख्मी जानवरों को भी जोतना, बुरी तरह मारना, खराब और कम चारा देना, बुड्ढे होने पर कसाई के हाथों बेच देना आदि कार्य निर्दयता और हृदय हीनता का परिचायक हैं। मांस के लिए हत्या करने में पशुओं को थोड़ी देर ही पीड़ा होती है पर इस प्रकार तिल तिल करके उन्हें सताने से तो उनका सारा जीवन ही त्राम पूर्ण हो जाता है। देखा जाता है कि तांगे वाले अपने घोड़ों पर बुरी तरह अत्याचार करते हैं। निर्धारित संख्या में दूनी क्यांदी सवारी भर लेते हैं और जब वह बेचारा उतना बोझ लेकर दौड़ नहीं सकता तो बड़ी बेरहमी से मारते हैं। पीठ में कहीं जख्म कर लेते हैं और उस जख्म पर चाबुक मार कर उसको भारी पीड़ा पहुँचाकर दौड़ा सकने में सफलता प्राप्त करते हैं। बोझा ढोने वाली ठेलागाड़ी तथा भैंसा गाड़ी भी इसी प्रकार से निर्दयता से भरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहती है । बहुत अधिक बोझ लाद कर लम्बी लम्बी यात्रा करने पर पशुओं को कितना कष्ट होता है उसका अनुभव कोई तभी कर सकता है जब उस स्थिति में कुछ समय उसे स्वयं रहना पड़े । अधिक और कठोर किस्म का वजन लादने में जानवरों की पीठ में जख्म हो जाते हैं, उनके पैर टेढ़े होकर आपस में घिसते हैं और पिछले टांगों के टखने में खून बहने लगता है । बैल भैंसों की गरदनों में जख्म रहते हुए भी उन्हें जोता जाता है । उनके थक जाने शिथिल हो जाने पर पूंछ मरोड़ कर, कील लगे हुए चाबुक को चुभो चुभो कर अधिक और तेज गति से काम करने के लिए विवश किया जाता है सुअरों के बाल उखाड़ते समय उन्हें भारी पीड़ा पहुँचाई जाती है । यह सभी बातें मनुष्यता को कलंकित करने वाली है । इनका विरोध किया जाना चाहिए, इन्हें रोका जाना चाहिए ।

माना कि इन निरीह प्राणियों पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए स्वार्थी मनुष्य ने अपने कानूनों में कोई स्थान नहीं रखा है, इन पशु पीड़क प्रत्याचारियों के विरुद्ध कोई न्याय एवं दंड व्यवस्था नहीं रखी है, उनके साथ में हर प्रकार के जुल्म ढाने के लिए मदमस्त मनुष्य ने अपने को स्वतंत्र रखा है । इतना कर लेने पर भी वह ईश्वरीय दंड से नहीं बच सकता । अन्याय और अत्याचार, निर्दयता और निष्ठुरता का व्यवहार करने वाले भगवान के कोप से बच नहीं सकते । उन्हें आज नहीं तो कल, इस लोक में नहीं तो परलोक में अपने कुकर्मों का दंड पाना ही पड़ेगा । मनुष्य जीवन श्रेष्ठ काम करने के लिए मिला है, न कि दूसरों को सताने के लिए । इसका आदर्श प्रेम और परोपकार है-न कि शोषण और उत्पीड़न हमें मानवता के आदर्शों की रक्षा करने के लिए इन अभागे उत्पीड़ित प्राणियों को न्याय दिलाने के लिए आगे बढ़ना होगा । उनके करुण क्रन्दन की ओर से कान बन्द करके निश्चय ही हम अपने परम पवित्र कर्तव्य से च्युत होने के अपराधी बनते हैं ।

हमें चमड़े से बनी हुई चीजों का उपयोग करना आज से ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

त्याग देना चाहिए । वह बहुत ही सरल और छोटा त्याग है । जो चीजें चमड़े से बनती हैं वे सभी बाजार में दूसरी चीजों से बनी मिल सकती है । इससे थोड़ी फैशन परस्ती शान-शौकत घटेगी पर उससे आर्थिक बचत भी होगी और मानवता को कलंकित करने वाले एक बड़े पाप से छुटकारा भी मिलेगा । हत्या के समय जो कष्ट प्राणी को होता है उसके पीड़ा संस्कार उस चमड़े के साथ जुड़े रहते हैं और उसके उपयोग करने वाले पर उनकी काली छाया हर वक्त छाई रहती है जिससे उसके मनोभाव सदा तमोगुण से घिरे रहते हैं । धार्मिक भावना वाले व्यक्तियों के लिए तो यह स्थिति अध्यात्मिक दृष्टि से भी बहुत बुरी है । इससे बचना आत्मतृप्ति में अभिरुचि रखने वालों के लिए आवश्यक है ।

इसी प्रकार जिन ताँगों में घोड़े जख्मी हों, अधिक सवारियाँ लदी हों, उन पर हम न बैठें । बोझा ढोने के लिए किसी गधे या गाड़ी वाले को काम देने से पहले यह देखले कि उसके जानवर जख्मी तो नहीं हैं, उन पर अत्याचार तो नहीं हो रहा । हमारे कारण यदि किसी पशु को कष्ट का भागीदार बनना पड़ता है तो इस पाप के भागीदार हम भी होते हैं ।

पशु हमारे कुटुम्बी परिजन है । उनके साथ सहृदयता का परिचय देने के लिए यदि हमें चमड़े का त्याग करना पड़ता है, पशुओं से काम लेते समय उन पर अत्याचार न होने पावे यह ध्यान रखना पड़ता है तो यह उचित ही है आवश्यक भी है और मानवोचित भी । इसे हम स्वयं करें और दूसरों को ऐसा ही करने के लिए प्रबल प्रेरणा दें यही कर्तव्य है ।

प्रकाशक-अखण्ड ज्योति कार्यालय, मथुरा.

मुद्रक-पं० पुरुषोत्तमदास कटारे, हरीहर इलैक्ट्रिक मशीन प्रेस, मथुरा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org